~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

बनकर रह गया। इससे राज्य में अराजकता आ गई इसी संकट की घड़ी में बलबन का उदभव हुआ तथा बलबन ने एक साथ कई समस्याओं का हल प्रस्तुत किया। सर्वप्रथम उसने तुर्क-ए-चिहल-गनी की शक्ति को तोड़कर राजतंत्र को एक गम्भीर पेशा बनाया, फिर उसने मंगोल चुनौती का सामना करते हुए भावी मंगोल नीति की आधारशीला रखी। इतना ही नहीं उसने रक्त एवं लौह की नीति का सहारा लेकर विद्रोहों को निर्ममतापूर्वक कुचल दिया। इस प्रकार उसने कानून व्यवस्था की स्थिति सुदृढ़ कर सल्तनत के भावी प्रसार का रास्ता तैयार कर दिया।

यही वजह है कि ऐसा माना जाता है कि अगर इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का संगठनकर्ता था तो बलबन वास्तविक संगठनकर्ता।

बलबन के उत्तराधिकारी तथा खिल्जी वंश की स्थापना :-

बलबन के पश्चात् उसका पुत्र बुगरा खाँ बंगाल के मुक्ति के पद पर ही रहना पसन्द किया इसलिए बलबन का उत्तराधिकारी बुगरा खां के पुत्र कैकुबाद को घोषित किया गया। किन्तु कैकुबाद एक अयोग्य शासक निकला तथा इस कारण से राज्य में अराजकता फैल गई। समाना के मुक्ति जलालुद्दीन

नही थी क्योंकि वे राजनिर्माता की भूमिका निभाना चाहते थे।

(ii) रूढ़िवादी मुस्लिम तथा उलेमा एक महिला के द्वारा शासित होना अपनी मर्यादा के विपरित समझते थे।

(iii) रजिया एक कुशल एवं दक्ष प्रशासक थी इसलिए तुर्की अमीरों को यह डर था कि उनकी शक्ति में कटौती होगी।

(iv) रूकनुद्दीन फिरोज के कमजोर शासन के अंतर्गत उत्पन्न अराजकता से फायदा उठाते हुए कुछ प्रान्तीय मुक्तियों ने राजधानी के आस-पास घेरा डाल दिया था।

(v) कुछ क्षेत्र में राजपूतों ने भी विद्रोह कर दिया था।

<u>रजिया के द्वारा किया गया समाधान</u> ÷

(i) उसने अमिरों की शक्ति को नियंत्रित किया जिन्होंने राजधानी को घेर रखा था तथा इनमें से कुछ को अपने पक्ष में मिला लिया (कबीर खान)। फिर उसने यह अफवाह फैला दी कि विभिन्न अमीर रजिया से मिले हुए हैं अतः परस्पर संदेह के कारण अमिरों की एकता भंग हो गई और उन्होंने राजधानी को खाली कर दिया।

(ii) रजिया ने प्रशासनिक दक्षता पर बल देकर यह सिद्ध कर दिया कि एक महिला होना शासक के रूप में उसकी अयोग्यता नही है। मिन्हाज-उस-सिराज लिखता है कि देवल से लेकर लखनौती तक सभी अमीर एवं मलिक ने रजिया के समक्ष सर झुकाया था।

इसलिए यह कार्य इल्तुतमिश के हाथों पुरा हुआ। इल्तुतमिश के पश्चात् इसके अयोग्य उत्तराधिकारी की भूमिका तथा तुर्क-ए-चिहलगनी की महाकांक्षा ने इल्तुतमिश के उपलब्धियों को लगभग शून्य कर दिया। अतः संगठन का कार्य अन्ततोगत्वा बलबन के हाथों पुरा हुआ।

सत्ता में आने के पश्चात् इल्तुतमिश को एक साथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा था यथा:- कुबाचा एवं यल्दौज जैसे प्रतिद्वंद्वियों की चुनौती, चंगेज खां के आक्रमण का खतरा, राजपूत राज्यों के द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा, बंगाल के शासक गयासुद्दीन का विद्रोह आदि। इल्तुतमिश ने उपर्युक्त सभी समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं उसने दिल्ली सल्तनत को एक संगठित प्रशासनिक ढांचे का आधार दिया साथ ही उसके लिए वैधता भी हासिल की। किन्तु इल्तुतमिश के द्वारा स्थापित नौकरशाही 'तुर्क-ए-चिहलगानी' ने उसके उत्तराधिकारियों के समक्ष एक बड़ी चुनौती उपस्थित की तथा तुर्की राजतंत्र चहलगनी के हाथों की कठपुतली

तत्वों का समन्वय हुआ तथा भारत में एक समन्वित संस्कृति का विकास देखा गया।

(iii) सांस्कृतिक :-
साहित्यिक एवं कला के विभिन्न रूपों के विकास की दृष्टि से भी इसे हम प्रगति का काल करार दे सकते हैं।

प्र० भारतीय इतिहास में मध्यकाल के अभिलक्षणों को स्पष्ट कीजिए।

(1) सामंतवाद का उत्थान
(2) जातियों से उपजातियों का विकास
(3) तुर्कों का आक्रमण तथा भारतीय समाज का द्वैतिज विभाजन (हिन्दु-मुस्लिम)
(4) तीसरे नगरीकरण का आरंभ एवं विकास
(5) कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ
(6) क्षेत्रीय भाषाओं का प्रोत्साहन तथा फारसी का प्रचलन
(7) समन्वित संस्कृति का विकास

प्र० दिल्ली सल्तनत के इतिहास के अध्ययन के स्रोत एवं उनका मुल्यांकन।

पुर्वमध्यकाल में अध्ययन के स्रोत के रूप में हमारी निर्भरता बहुत हद तक अभिलेखिय साक्ष्य एवं मुद्राओं पर थी क्योंकि इस काल के साहित्यिक ग्रंथ समकालीन इतिहास पर बहुत ही कम प्रकाश डालते हैं। किन्तु सल्तनत और मुगल काल में अध्ययन स्रोत के रूप में बड़ी संख्या में फारसी रचनाएँ उपलब्ध रही थी। इसलिए